ओम आकृति विधा

हिंदी काव्य जगत में अभिनव प्रयोग

प्रथम काव्य संग्रह

सुषमा नैय्यर

वैश्विक हिन्दी संस्थान
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

ओम आकृति विधा:

हिंदी काव्य जगत में अभिनव प्रयोग

प्रथम काव्य संग्रह

सुषमा नैय्यर

प्रकाशक
वैश्विक हिन्दी संस्थान
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

Publisher
Vaishwik Hindi Sansthan
Houston, USA

प्रथम संस्करण 2023
First Edition 2023
ISBN: 979-8-9865270-1-7

© सुषमा नैय्यर

इस पुस्तक के (काव्य भाग) में लिखी गई विषयवस्तु, तथ्य, विचार एवं विश्लेषण पूरी तरह से लेखक के अपने हैं एवं लेखक की संपत्ति है। इसके सर्वाधिकार भी लेखक के पास सुरक्षित है। पुस्तक या उसके किसी भी अंश का पुनर्प्रस्तुतिकरण किसी भी माध्यम से स्वीकार्य नहीं होगा: चाहे यांत्रिक माध्यम हो या इलेक्ट्रॉनिकं: जानकारी का संचयन लिखित आज्ञा के बिना नहीं किया जाना चाहिए। केवल एक समीक्षक को समीक्षा में आंशिक उद्धरण उद्धरित करने की छूट रहेगी।

The contents, facts, views, and analysis in all (poetic creations) in this work are entirely the property of the author and she reserves all rights in this regard. No part of this book may be reproduced in any form on or by an electronic or mechanical means, including information storage and retrieval systems, without permission in writing, except by a reviewer who may quote brief passages in a review.

नूतना विधा समर्पितास्ति

अस्ति नवल नूतनम् काव्याञ्जलि स्वीकरोतु!

मुखवाचः समर्पितः कविम् वरं देहि! वरं देहि!

सफलं प्रयोगं कुर्वन्तु काव्यकलश: समर्पितः!

स्वीकृत्य आशीर्वादं ददातु नवप्रवर्तिता नूतना विधास्ति समर्पिता!

शारदे! वरं देहि! वरं देहि!!

आमुख

हे कृष्ण मुरारी!

हे
कृष्ण
मुरारी!
राधा प्यारे
सब से न्यारे
जग रखवारे!
जग में है क्रंदन
हे वसुदेव नंदन
प्रभु बिसराया तुमने
कृपा करो देवकीनंदन!!
भगवन हम तेरी राया
निष्ठुर तेरी यह माया
दुर्बल मेरी है काया
मैं शरण में आया!
राधे प्रियतम
पीड़ा में हम!
भगवन
प्रणम्य
नम्य!
ॐ

जैसा कि हम जानते हैं, सन् 2020 के आरम्भ में कोरोना महामारी ने विश्व को पीड़ित करना शुरू किया, जिस से आज भी सब त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। यद्यपि वैज्ञानिकों के अथक परिश्रम से बहुत कुछ राहत मिली है; पर इस संकटकाल में लाखों घर तबाह हो गए। इस संकट से मुक्ति हेतु प्रभु-प्रार्थना के लिए एक काव्य संकलन की रचना हुई, जिसे 'कृष्ण काव्य पीयूष' नाम दिया गया। मुझे इस संकलन का प्रधान सम्पादक होने का सौभाग्य मिला। प्रभु श्री कृष्ण की स्तुति में मेरी कलम से उपर्युक्त कविता का प्रादुर्भाव हुआ।

कविता के इस कलेवर को साहित्य जगत का बड़ा आशीर्वाद मिला और कई कवियों ने इस प्रकार की कविताएँ लिखना आरम्भ किया। 2022 में प्रकाशित 'भारत काव्य पीयूष' में इस कलेवर की 11 कविताएँ प्रकाशित हुईं; साथ ही साथ कई काव्य गोष्ठियाँ भी आयोजित हुईं। अनेक कवियों ने आग्रह किया कि कविता के इस स्वरूप को एक नई पहचान व नाम दिया जाये। काफी चर्चा-विचारणा के बाद इसे 'ओम आकृति विधा' नाम दिया गया। आज बहुतेरे कवि इस विधा में कविताएँ लिख रहे हैं।

श्रीमती सुषमा नैय्यर जी द्वारा रचित इस काव्य- संकलन में ओम आकृति विधा में रचित 101 कविताएँ हैं, जो इस विधा का प्रथम काव्य संकलन है। विधा का गहन अध्ययन कर उन्होंने भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखकर हमें अपनी प्रतिभा से परिचित कराया है। बड़े आश्चर्य की और सुखद बात यह रही कि इस विधा में कविताएँ लिखने से उन्हें स्वयं को बड़ा स्वास्थ्य लाभ हुआ, जिसका ज़िक्र उन्होंने स्वयं पुस्तक की प्रस्तावना में किया है। इस उत्तम संकलन के लिए मैं उनको हार्दिक बधाई देता हूँ। वे अपने अनुभव को समाज से साझा करना चाहती हैं ताकि अन्य पीड़ितों को भी इसका लाभ मिल सके।

आशा है आप इस पुस्तक का स्वागत करेंगे और इस विधा से होनेवाले लाभ को अपने इष्ट-मित्रों से साझा करेंगे।

डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता

ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

प्रस्तावना

“ओम आकृति विधा” साहित्य जगत को एक अध्यापक की अनुपम भेंट!!

माँ सरस्वती के चरणों में सादर समर्पित नव विधा एवं नवीन काव्य संग्रह

“ओम आकृति विधा” साहित्य जगत में अभी तक इस नाम से कोई परिचय नहीं मिलता परंतु अपने काव्य लेखन के सफ़र में पिछले एक वर्ष में मैंने जिस विधा में सर्वाधिक लिखा है उसका नाम है “ओम आकृति विधा”। मुझे इस विधा के विषय में पिछले वर्ष "वैश्विक हिंदी संस्थान" के माध्यम से जानकारी प्राप्त हुई। अमेरिका के ह्यूस्टन शहर में स्थित "वैश्विक हिंदी संस्थान" एक अंतरराष्ट्रीय मंच है जो कि विश्व के अनेक राष्ट्रों में हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए कार्य कर रहा है। इस मंच की स्थापना एक प्रवासी भारतीय डॉ० ओमप्रकाश गुप्ता जी के द्वारा की गई। आइए, अब आपको बताते हैं कि “ओम आकृति विधा” क्या है और इस विधा से जुड़ा मेरा अनुभव क्या कहता है।

साहित्य में सदा ही नवीन प्रयोग होते रहे हैं और होते रहेंगे जिससे कि साहित्य की भागीरथी सदैव पल्लवित रहेगी। ऐसे ही एक नवीन प्रयोग, एक नवीन काव्य विधा का जन्म साहित्य जगत में फिर से हुआ है जिसका नाम है “ओम आकृति विधा”।

“ओम आकृति विधा” की खोज करने का श्रेय आदरणीय डॉ० ओमप्रकाश गुप्ता जी को जाता है। अमेरिका के ह्यूस्टन शहर में रहने वाले डॉ० ओमप्रकाश गुप्ता जी एक प्रवासी भारतीय है और पेशे से एक अध्यापक हैं। गरिमापूर्ण व्यक्तित्व के धनी डॉ० ओमप्रकाश गुप्ता जी विदेश में रहकर भी जिस अनुराग से हिंदी के प्रचार प्रसार एवं भारतीय ग्रंथों के ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं वह वंदनीय है। ऐसा कार्य करने वाले बहुत ही कम

लोग मिलते हैं और खासकर तब जब वे भारत छोड़कर किसी अन्य देश जा बसे हों। लेकिन आदरणीय डॉo ओमप्रकाश जी देश से दूर तो ज़रूर रह रहे हैं, लेकिन उन्होंने भारत को अपने दिल में बसा रखा है। हिंदी एवं हिंदुस्तान अपने ऐसे गुणी पुत्रों के सदैव ऋणी रहेंगे।

हिंदी भाषा एवं साहित्य की निरंतर प्रगति के लिए कार्य करते हुए उन में दूसरी भाषाओं में लिखे जाने वाले साहित्य की बारीकियों को समझने की भी ललक है। जैसे कि जापानी साहित्य की एक विधा "हाइकु" पर उन्होंने "श्री राम हाइकु पीयूष" के नाम से हाइकु विधा में विश्व के प्रथम हिंदी हाइकु काव्य संग्रह की रचना करवाई और इतना ही नहीं, अपनी इसी जिज्ञासु प्रवृत्ति के चलते उन्होंने काव्य जगत में एक नवीन विधा की खोज भी कर डाली, जिसमें वर्ण गणना के आधार पर काव्य में आकृतियों की रचना की जा सकती है।

अब "ओम आकृति विधा" में लिखी गई इस पुस्तक के माध्यम से, जो इस विधा में लिखी जाने वाली सबसे हिन्दी साहित्य कि सबसे पहली पुस्तक है; इस विधा को काव्य-रूप में माँ सरस्वती के चरणों में श्रद्धा सुमन स्वरूप सादर समर्पित करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि हे माँ! इसे अपना आशीष दें कि साहित्य जगत में यह विधा नए कीर्तिमान स्थापित कर सके!!

ओम आकृति विधा" के साथ मेरी अनुभव यात्रा: अब कुछ शब्द इस पुस्तक के विषय में और इस विधा के साथ अब तक मुझे जो सकारात्मक अनुभव प्राप्त हुआ है उसके विषय में कहती हूँ।

आइए चलते हैं अनुभव के इस छोटे से सफ़र पर जिसमें एक नवीन जन्मी विधा के साथ एक नवीन अनुभूति ने भी जन्म लिया है और उस अनुभूति से ही जन्म हुआ है इस पुस्तक का। जी हाँ, बात लगभग एक वर्ष पुरानी है, जब आदरणीय डॉo ओमप्रकाश गुप्ता जी के मार्गदर्शन में हम कई रचनाकार "श्री राम हाइकु पीयूष" नामक काव्य संग्रह (जिसका कि मैंने ऊपर इस प्रस्तावना में उल्लेख भी किया है) पर लेखन का कार्य कर रहे थे; तो उन्ही दिनों आदरणीय

ओमप्रकाश जी ने हम सब रचनाकारों को एक नवीन प्रयोग से अवगत करवाया, जिसकी रचना उन्होंने स्वयं की थी। उन्होंने श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर एक रचना लिखी जो कि इस विधा की सर्व प्रथम रचना है (इस पुस्तक के आमुख में उस रचना को प्रस्तुत किया गया है) और फिर हम सबको भी उस प्रकार से लिखने के तरीके से अवगत करवाया। उन्होंने बताया कि वर्णों की सुनिश्चित संख्या में गणना करते हुए यदि हम अपने भावों को काव्यबद्ध करें तो न केवल हम काव्य में आकृतियों की रचना कर सकते हैं बल्कि बहुत कम शब्दों में बड़ी से बड़ी रचनाओं को लघु रूप में भी लिख सकते हैं। इस परिचय के साथ साथ उन्होंने हम सब को भी प्रेरित किया और विषय दिया उस प्रकार से लिखने के लिए। सबने एक से बढ़कर एक रचनाएँ लिखकर प्रेषित कीं। मैंने भी अपनी रचना प्रेषित की लेकिन मुझे नहीं पता था कि उस रचना के साथ ही साथ इस विधा के लिए एक गहन अनुराग और उस अनुराग की वजह से एक नवीन सकारात्मक अनुभूति भी मेरे जीवन में जन्म ले लेगी क्योंकि इस विधा की प्रथम रचना के साथ आरंभ हुआ वह सफ़र आज तक अनवरत जारी है और पिछले एक वर्ष में मैंने शायद ही किसी अन्य विधा में इतना लिखा हैं, जितना कि मैंने इस विधा में लिखा है। इसके दो सकारात्मक परिणाम हुए, पहला यह कि मेरे पास असंख्य रचनाओं का संग्रह हो गया जिनमें से इस पुस्तक का भी जन्म हुआ और दूसरा इस विधा में लिखने में मल्टी टास्किंग करनी पड़ती है यानि कि कई बिंदुओं को एक साथ पकड़कर चलना पड़ता है जिससे मेरी मानसिक ऊर्जा बहुत बढ़ी और मुझे पार्किंसन नामक रोग जिससे कि मैं पिछले 13 वर्ष से ग्रसित हूँ, उसमें बहुत आराम मिला है। अपने इस अनुभव को एक रचना के माध्यम से मैंने लिखा था जिसको मैं यहाँ पर प्रस्तुत भी कर रही हूँ क्योंकि वह रचना अपने आप में बहुत कुछ बयान करती है.....

ओम आकृति विधा

है

विधा

नवीन

आधारित

गणना पर,

बन सकती है

अभ्यास विकल्प

ब्रेन टीज़र सम,

मस्तिष्क का हो अभ्यास

सुडोकू क्रॉसवर्ड सम,

बार बार गणना करना

पंक्ति के अनुसार लिखना,

गणना ध्यान से करना

आकृति की रचना,

एक साथ सब

गहन होता

अभ्यास,

खुद से

हुआ

है

ऐसा

मुझको

अहसास,

कुछ दिनों से

नहीं ज़रूरत

कोई अन्य अभ्यास,
बस गणना करना
गिनकर लिखते जाना,
शब्दों में भावों को भी भरना
आकृति का भी ध्यान रखना
है मल्टीटास्किंग करना,
दे सकता है आराम
पार्किंसंस रोग में
अल्जाइमर में,
सिखा रही हूँ
यह विधा
रोगियों
को भी
मैं,
अब
जल्द ही
लिखूँगी मैं
एक पुस्तक,
पहुँचाना उसे
मानसिक रोगियों
मनोचिकित्सकों तक,
कई तरह से अभ्यास
इस पुस्तक में दिया होगा,
त्रुटियों में सुधार करना
गणना कई बार करना,
और रिक्त स्थान भरना

स्वयं रचना करना,
अंत में परीक्षण
ज़रुरी चरण,
मंशा ये मेरी
आशीश दें
प्रयोग
शुभ
हो

पार्किंसंस (Parkinson's Disease) के रोगियों के मस्तिष्क की गतिविधि को बढ़ाने के लिए सुडोकू (Sudoku) और क्रॉसवर्ड (Crosswords) जैसी पहेलियों का अभ्यास प्रतिदिन करने के लिए कहा जाता है। जब से मैंने "ओम आकृति विधा" में लिखना प्रारंभ किया है, तब से मुझे अब इस प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता नहीं महसूस होती। अतः मेरा अनुभव कहता है कि यह विधा मानसिक रोगियों के लिए वरदान साबित हो सकती है। इसीलिए मैं इसका अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करना चाहती हूँ, ताकि मेरे जैसे अन्य पीड़ित भी इससे लाभान्वित हो सकें। आगे समय ही बताएगा कि इस कार्य में कितनी सफलता मिलती है।

हार्दिक आभार आदरणीय डॉ० ओमप्रकाश गुप्ता जी को कि उन्होंने मुझे इस विधा का प्रचार प्रसार करने की अनुमति दी।

सुषमा नैय्यर
लखनऊ, भारत

“ओम आकृति विधा” का परिचय एवं नियमावली

“ओम आकृति विधा” मुख्यतः आरोह-अवरोह पर केंद्रित एक वार्णिक विधा है, जिसमें वर्ण गणना के उत्तरोत्तर बढ़ते और घटते क्रम के साथ काव्य में अनेक आकृतियों की रचना की जा सकती है। धनुष, हीरा, षट्कोण, अष्टकोण इत्यादि कुछ मुख्य आकृतियों के नाम हैं।

इस विधा की एक सुचारू एवं सुस्पष्ट नियमावली है, जिसकी रचना आदरणीय डॉ० ओमप्रकाश गुप्ता जी ने की है, जिसका उल्लेख यहाँ किया जा रहा है।

ओम आकृति विधा नियमावली

1. यह एक वार्णिक विधा है।

2. पहले पंक्ति में 1 वर्ण, दूसरी पंक्ति में 2 वर्ण, इसी प्रकार आगे बढ़ते जाएँ; … 10वीं पंक्ति में 10 वर्ण।

3. अब उल्टा चलें, 11 वीं पंक्ति में 9 वर्ण, 12वीं में 8 वर्ण, इसी तरह अंतिम पंक्ति में 1 वर्ण।

4. चाहें तो 11 वीं पंक्ति में 10 वर्ण, 12वीं में 9 वर्ण, इसी तरह अंतिम पंक्ति में 1 वर्ण- भी कर सकते हैं।

5. आधे वर्ण की गिनती नहीं होगी। जैसे ‘भक्त’ में 2, प्रबंध में 3, और कुम्भकर्ण में 4 वर्ण हैं। (हाइकु की भांति)

6. ओम्/ॐ एक वर्ण है - यथासंभव आरम्भ में या अंत में ॐ प्रयोग करें, पर अनिवार्य नहीं है। ध्यान रहे ‘ओम’ में दो वर्ण हैं।

7. 10 वर्ण तक जाना आवश्यक नहीं; 5,6,7, ...,11,12,… किसी भी संख्या तक जा सकते हैं और साथ ही साथ यदि चाहें तो आरोह से अवरोह पर जाने से

पहले मध्य की सबसे बड़ी वर्ण गणना की पुनरावृत्ति भी कर सकते हैं जैसे कि ..... 7,8,9,9,8,7 .... इस प्रकार से और बिना पुनरावृत्ति के भी लिख सकते हैं ..... 7,8,9,8,7 .... इस प्रकार से

8. एक वर्ण से आरंभ करना भी आवश्यक नहीं। 2 या 3 वर्ण से आरंभ किया जा सकता है, किन्तु प्रथम और अंतिम पंक्ति में वर्णों की संख्या समान होनी चाहिये। उदाहरण, यदि प्रथम पंक्ति में 3 वर्ण हों तो अंतिम पंक्ति में भी 3 वर्ण होने चाहिये।

9. वर्णों की सख्या सम (even) या विषम (odd) भी हो सकती है। जैसे, 2,4,6,8,10,8,6,4,2 व 3,5,7,9,11,13,11,9,7,5,3

10. मध्य में आई वर्णों की संख्या को दोहराया भी जा सकता है, जैसे 2, 3,4,5,6, 7,7,7,6,5,4,3,2 (यहाँ 7 वर्णों को 3 बार दोहराया गया है) व 1,3,5,7,9,11,11,9,7,3,1 (यहाँ 11 वर्णों को 2 बार दोहराया गया है) आदि।

11. हर पंक्ति अपने आप में पूर्ण सार्थक हो, न कि किसी एक वाक्य के टुकड़े।

12. यद्यपि रचना में तुकांत अनिवार्य नहीं है, कविता के सौन्दर्य के लिये जहाँ-जहाँ संभव हो तुकांत वांछनीय है।

13. 'ओम आकृति' कविता में कम-से-कम 10 पंक्तियाँ होनी चाहियें। कविता बनने पर स्वयं एक आकृति का स्वरूप लेगी।

14. रचना अपने आप में सम्पूर्ण होनी चाहिये जो किसी भाव-विशेष को प्रकट करती हो।

15. 'ओम आकृति' भी अन्य विधाओं की तरह हिन्दी कविता की एक गंभीर विधा है, इसे शब्दों का खेल न समझें।

उदाहरण के लिए " ओम आकृति विधा" में आमुख और प्रस्तावना में दी गईं के अलावा निम्न कविताओं को देखें।

१

हे

कृष्ण

मुरारी

राधा प्यारे

सब से न्यारे

जग रखवारे

जग में है क्रंदन

हे वसुदेव नंदन

माधव कंस निकंदन!

केशव! हम तेरी राया

निष्ठुर तेरी यह माया

दुर्बल मेरी है काया

मैं शरण में आया!

राधे प्रियतम

पीड़ा में हम!

भगवन

प्रणम्य

नम्य!

ॐ

२

हे कृष्ण!

राधा प्यारे

सब से न्यारे

जग रखवारे

जग में है क्रंदन

हे वसुदेव नंदन

प्रभु बिसराया तुमने

कृपा करो देवकीनंदन

भगवन हम तेरी राया

निष्ठुर तेरी यह माया

दुर्बल मेरी है काया

मैं शरण में आया

राधे प्रियतम

पीड़ा में हम

भगवन

प्रणम्य!

३

हे

माधव

कृष्ण मुरारी !

जग में है क्रंदन

प्रभु है तुमको वंदन

कृपा करो हे देवकीनंदन!

निष्ठुर तेरी यह माया

मैं शरण में आया!

पीड़ा में हम

प्रणम्य!

ॐ

इस प्रकार से वर्ण गणना से आकृति की रचना जितनी महत्वपूर्ण है उतना ही महत्वपूर्ण है रचना का भावपूर्ण होना क्योंकि यह विधा शब्दों का आडंबर नहीं वरन् एक गहन विधा है।

काव्य संग्रह

१. सरस्वती वंदना

है

नव

नवल

काव्यांजलि

स्वीकार करें!

हे माँ सरस्वती!

शब्द भाव अर्पित!

काव्याकार है अर्पित!

वर दे दो, हे माँ शारदे!

काव्य कलश अर्पित है माँ!

स्वीकार कर आशीष दो!

सफल ये प्रयोग हो!

नव विधा अर्पित!

नव पुष्पांजलि

है समर्पित!

वर दे दो!

शारदे!

वर दो

माँ!

२. सरस्वती वंदना

हे!

वीणा

वादिनी!

सरस्वती!

वर दे दो माँ!

मिटे धूम्रलेखा!

जुड़े गति की रेखा!

ज्ञान का प्रकाश दो माँ!

सफल सिद्ध राह दो माँ!

वीणा वादिनी सरस्वती माँ!

वर दो यज्ञ पूर्ण हो माँ!

वायुवेग गति दो माँ!

सिद्ध हो प्रयोजन!

कंचन मणियाँ

प्रस्फुटित हों

ज्ञान वाली!

सर्वत्र

तेज

हो!

३. मंगलकामना

ॐ

करें

प्रभु से

करबद्ध

यह प्रार्थना!

सफल हो विधा!

है मंगलकामना!

आशीष दे कण कण!

धरती, व्योम, जल-थल!

पल्लवित होवे यह विधा!

आशीष देवे सृष्टि सकल!

साहित्य जगत हर्षावे!

नवीन विधा पाकर!

सब करें सम्मान!

सदा सदा होवे

शुभ मंगल!

सदा सदा

मंगल

होवे

ॐ

४. नव विधा जन्मी

है

ओम

आकृति

विधा जन्मी,

वर्ण गणना

भाव संरचना

काव्याकृति रचना,

अति सुंदर सार्थक

उपयुक्त नामकरण,

साहित्य गगन में चमके!

यह आकृति युक्त विधा!

अति प्रतिष्ठित होवे!

है मंगलकामना!

है शुभकामना!

पल्लवित हो

यह विधा!

प्रयोग

शुभ

हो!

५. प्रगति करे नव विधा!!

ॐ

विधा

सार्थक

उपयुक्त

नियमावली

अति सौम्य काव्य

आकृति युक्त विधा

आज नामांकित हुई!

नवल कीर्ति मिले!

यश मान बढ़े!

पल्लवित हो!

यह विधा!

कामना

करें!

ॐ

६. हे विधा जनक! शत शत नमन!

सदा

नमन!

शत शत!

विधा जनक!

साहित्य-गगन

हुआ है प्रकाशित!

उदित नवीन चंद्र!

काव्य में आकृति रचना

कितना सुंदर है सपना!

साकार आपने है किया!

नमन आकाश भर!

तोहफा है सुंदर!

धन्य राष्ट्र हुआ!

आप सा पुत्र

जो है मिला!

धन्य हैं

आप!

७. आभार आपका

आभार
है आपका!
विधा जनक!
हृदय से कहें
नाम होवे अमर!
विधा रच दी सुंदर!
आरोह अवरोहावली
सुस्पष्ट सी नियमावली,
कैसे था यह विचार उठा?
सब किस प्रकार किया?
वर्णो को आकार दिया!
भावों से वार दिया!
चमक उठा है
काव्य कलश!
नई विधा
पाकर!

८. काव्य जगत ऋणी रहेगा

है

पूर्ण

सागर

सम विधा

गुण वाहक,

हे विज्ञ मानव!

नमन हो आपको!

किया विधा आविष्कार!

है अनुपम उपहार!

ऋणी रहेगा काव्य संसार!

करे हृदय से आभार!

नमन हो सदा सदा!

हे सरस्वती सुत!

हे ज्ञानी मनुष्य!

हे अध्यापक!

है नमन!

आपको!

सदा!

ॐ

९. नव योग उद्घटित

ॐ

देखा

वर्णों की

गणना से

आकार लेता

अद्भुत सौंदर्य,

भावों ने पहना है

वर्ण युक्त आवरण

नव योग उद्घटित

काव्य में प्रस्फुटित

आकृति किरण,

शब्दावरण

प्राणाधान

गहन

भाव

से

१०. लघु कविता, लघु रूप

लघु

कविता

लघु रूप,

भाव प्रधान

सागर संपूर्ण,

सार्थक काव्याकृति

शब्द आडंबर नही,

गागर में सागर

रूप लघुतर,

नया प्रयोग

है सुंदर

सुयोग्य

काव्य

११. वर्ण गणना आकृति रचना

हो

चाहे

विषय

कोई सा भी,

साकार होवे

काव्य में आकृति

ऐसी है विधा नई,

बस गिनते जाना है

शब्दों को लिखते जाना है

बुनना भावों का ताना-बाना,

नहीं बिल्कुल भी कठिन

नहीं थोड़ी भी जटिल

फिर कैसी मुश्किल?

हम सब लिखें

रचना करें

मिलजुल

नवीन

विधा

में

१२. गागर में सागर सम नवीन विधा

है
लघु
इतनी
विधा नईं,
भावों से युक्त
सघन गगरी,
समाई है इसमें
सकल काव्य नगरी,
हल्की नहीं अति गहन
संपूर्ण है, अति प्रबल है
गागर में सागर विधा नईं,
शब्द विन्यास सूझबूझ से
आकृति सार्थक हो उठे,
वर्ण गणना ध्यान से
ऐसे ही आगे बढ़ें,
स्वतंत्र पंक्तियाँ
आश्रित नहीं,
फिर भी है
इकाई
एक
ही

१३. नवीन विधा नया इतिहास रचे!!

है

यह

हार्दिक

अभिलाषा

नव विधा में

सतत प्रयास

सतत सहयोग

नया इतिहास रचें

गिनते हुए वर्ण दल

प्रगति करे काव्य कौशल,

चुनौती प्रतिदिन मिले

भाव भी उमड़ पड़ें,

कठिन संघर्ष हो

कलम के लिए

प्रत्येक दिन,

बज उठे

बिगुल

विधा

का

१४. नई विधा, नये प्रयोग

यूँ

चलें

सृजन

मार्ग पर,

उमड़ पड़े

रचना कौशल,

मेघ हों विचारों के

भाव वर्षा घनाघन,

इतना प्रबल संघर्ष

छलक उठे काव्य कलश,

कोई न कोई विषय हो

रचना उसी पर हो,

नये नयें प्रयोग

करें हम लोग,

संकल्प करें

संकलित,

आकृति

विधा

ॐ

१५. नव विधा में समाहित हर भाव हो

ॐ

लिखें

पत्रिका

नवीन सी,

आवेदन हो

प्रतिवेदन हो,

कहीं दिखे अहिल्या

कहीं राधा व मीरा हों,

केवट की सी नाव मिले

रघुवर जी की छाँव मिले,

सूर्य की तपती किरण

दरख़्तों का गाँव मिले,

कर्म की गीता मिले

राम सीता मिलें,

समाहित हो

हर भाव

आकृति

विधा

में

१६. ॐ

ॐ

सत्य

साकार

निराकार

निर्विकार ॐ

सृष्टि का आदि ॐ

सृष्टि का अंत भी ॐ

गहन धरती है ॐ

अंबर अनंत भी है ॐ

जीवन का पूर्ण आधार ॐ

वेदों का सार ॐ सिर्फ ॐ

दिशा विस्तार में भी ॐ

मंत्रोच्चार ॐ ही ॐ

अनाहत नाद

सूक्ष्म संवाद

सब है ॐ

सिर्फ ॐ

बस

ॐ

१७. श्री राम वंदना

हे

राम!

भाव से

श्वास श्वास

अर्पित करूँ!

श्रद्धा का संकल्प!

पद पंकज पखारूँ!

अर्पित हैं नैवेद्य अर्घ्य!

अक्षत सुमन से वंदन!

प्रणाम बारंबार करूँ!

मस्तक पर चन्दन!

नेह अर्पित करूँ!

हे रघुनंदन!

हे सियावर

रामचन्द्र

नमन!

सदा!

ॐ

१८. राम शरण

ॐ

राम

चाकरी

जो भी करे,

भव सागर

कर जाए पार,

नमस्कार हो सदा!

हे जग के करतार!

त्याग दो माया के बंधन

आओ चलें हरि की शरण,

छोड़ दो निम्न आचरण

श्रेष्ठ हैं प्रभु चरण,

सुंदर उदाहरण

श्री हरिहरण,

करो तर्पण

समर्पण

भाव से

करो

ॐ

१९. जय हो! राम भक्त हनुमान!

हे

सुत

मारुति!

हनुमंत!

कृपा निधान!

गुण रसखान!

परम शक्ति धाम!

राम नाम रखवाले

राम नाम उर गुंफित!

राम सिया ह्रदय अंकित!

सदा नमन! हे अंजनि सुत!

राम भक्त! शिव अवतार!

भक्त रहे तुम्हे पुकार!

तुम शक्ति के संसार!

भक्ति के मूलाधार!

सर्वदा नमन!

अपरंपार!

सदा सदा

प्रणाम!

तुम्हें

ॐ

२०. नव वर्ष

ॐ

वर्ष

नवीन

शुभ होवे,

सुख समृद्धि

यश मान वृद्धि,

नवल सी रश्मियाँ

हर पग पर मिलें

मिले नूतन नव हर्ष

जीवन के पथ पर मिले

शुभ मंगल नव वर्ष

अभिमंत्रित जीवन

स्नेह सम्मान से हो

सुख संतोष हो

नव योग हो

मुबारक

नूतन

वर्ष

ॐ

२१. एक प्रार्थना!

हे

प्रभु!

सर्वदा

मुझे देना

परोपकार!

सद आचरण!

सदा उच्च विचार!

प्रवाहमान हो जाऊँ!

सदा सलिल वेग सम!

वायु सी गति देना भगवन्!

काम आ सकूँ मैं उनके

निष्प्राण से जो हैं पड़े

भाव से भर देना!

ऐसा वर देना!

हे मेरे प्रभु!

साकार हो!

प्रार्थना

मेरी!

ॐ

२२. हे प्रभु! छल बल न देना

हे

प्रभु!

मै रहूँ

सदा सदा

सौम्य सरल!

प्रयोग प्रयास

कभी न हो निष्फल!

सहज शुभ सम्मान

हित चाहूँ सदा सबका!

न देना कभी भी ऐसी शक्ति

जो निर्बल का करूँ कभी बुरा!

नहीं चाहिए ऐसा भाव भी

जो किसी से भी ईर्ष्या करें!

ऐसा ज्ञान भी न देना

अभिमान जिसका

मुझे होने लगे!

सहज रहूँ!

छल बल

न देना!

प्रभु!

ॐ

२३. दीवाली आई है

हैं

दीप

दीवाली,

खुशियाँ हैं

घर घर छाईं,

धन दौलत संग

लक्ष्मी मैया घर आई,

कंचन थाल कपूर सा

बाती की लौ दे रही बधाई,

खिले खिले चेहरे हैं सबके

घर घर में रौनक आई,

लड्डू मोदक थाल भरे

मेवा मिश्री लाल हरे,

गणेश लक्ष्मी सोहें

रिद्धि सिद्धि होवे,

मंगलकारी

दीपदान

दीवाली

आई

है

२४. अंदाज ए बयां बरसती बूँदों का

बरसे

घनघोर

बड़ा ही मस्त

अंदाज ए बयां

बरसती बूँदों का

छोटे बड़े, बच्चे बूढ़े

बारिश में भीगते संग

पहली फुहार बारिश की

आह्लादित करती तन मन

नृत्य कर उठता मन मयूर

पाकर बूँदों की ठंडी छुअन

गाँव गाँव, शहर शहर

नयनाभिरामम् दृश्य

खिल उठे रोम रोम

भीगते बारिश में

बालक सदृश्य

बचपन ज्यों

लौट आता

फिर से

२५. उम्मीदों से भरा नया सवेरा

ॐ

नया

सवेरा

प्राण भरे

नई आशायें

उदित हो जातीं

जन गण जीवन में

उम्मीदों से भरा सवेरा

प्राण भरता हर जन में

अंधकार का वर्चस्व समेटे

जब विदा हो जाती यामिनी,

उदित हो नया सवेरा

लेकर मार्तण्ड छवि,

आलौकिक दिवस

दे उम्मीद नई

प्राणदायिनी

सुवासित

मलय

प्राण

दे

२६. निशा का नव उजास

ॐ

नभ

गर्वित

चंद्रिकाएँ

विलास करें

परिलक्षित है

कंचन मणियों सा

नयनाभिराम दृश्य

चहुँ ओर फैले चाँदनी

चहुँ ओर फैला प्रकाश है

कण कण उदित नव तेज

कण कण नव उजास है,

चंचल चंद्र चकोर सा

बाँट रहा उल्लास है,

मंद मंद मधुर

सुखद प्रकाश,

नव उजास

नव योग

हर्षित

करें

ॐ

२७. ज़िंदगी

ये

बता

ज़िंदगी

क्यों खेलती

आँख मिचोली,

नादान सी ज़िंदगी

अज़ीम है हस्ती तेरी,

नायाब से तेरे फैसले

तोलूँ तुझे किस तराज़ू में,

किस पैमाने से नापूँ तुझे?,

शहंशाहों की शहंशाह

कभी सब कुछ दे दे

सब कुछ ले कभी,

अजब कहानी

ज़िंदगी तेरी,

नटखट

नादान

भोली

सी

२८. कौन समेटे गरल?

हे
शंभू!
शंकर!
नीलकंठ!
पीया गरल
सृष्टि हित हेतु,
अमय हो उत्पन्न
ये मंगलकामना थी,
समेटना था गरल को
था कर लिया नीला कंठ को,
क्या यह नही एक साधना थी?
सब हों सुखी यही तो भावना थी,
आज व्यस्त सब अमय पान में
वो त्याग किसी को नहीं ध्यान में,
फिर लौट आई दुर्भावना
क्यों फिर से शापित हुई
जो मंगलकामना थी?,
कैसे हालात हुए?
हैरान सब हैं
कौन समेटे?
गरल को
विकट
स्थिति
है

२९. फिर कोई नीलकंठ जन्मे

आज

कहो तो

त्रिवेणी-सी

त्रिज्या कोई

वर्णित कर दूँ,

समर्पित कर दूँ

रच नया गीत कोई,

क्षार क्षार छोड़ के चलूँ?

या समाहित गरल भी?

फिर कोई नीलकंठ जन्मे

फिर से सृष्टि माँग रही

प्रगल्भ प्राण पटल

आज उद्वेलित हो

प्रक्षेपित फिर

निरपेक्ष सा

आकार हो

साकार

आज

३०. कब पूर्ण विराम होगा?

प्रभु

अब तो

कहें सभी,

थक चुके हैं

इरादे बुरे से

कब विश्राम होगा?

लाचार है सृष्टि सारी

जाने क्या अंजाम होगा?

अनवरत समस्याएँ हैं

कब पूर्ण विराम होगा?

दुष्ट परिस्थितियों से

कब तक संग्राम?

कितनी प्रतीक्षा

करनी होगी?

कब होगा

विराम

पूर्ण?

३१. उठो सृजन करो

है

कौन

विपदा

ग्रस रही?

बताओ जरा,

हुई मंद गति

मंथर हुआ स्वर

सस्मित शब्द कलश

सो गया रचना कौशल

आवेग शून्य, प्रयोग न्यून,

जागो उठो सृजन करो

सृष्टि फिर फूले फले

हो प्रबल प्रतिष्ठा

यही है कामना,

रवि के सम

चहुँ ओर

प्रसृत

तेज

हो

३२. दायरों की दुनिया

है

यह

दुनिया

दायरो की

अंधी है दौड़

दीवारों का दौर

आपाधापी है मची

कशमकश है हावी

कीमत है हर बात की

मुफ्त में मिलती नही

बेफ़िक्री बेख़्याली भी

दम भरने के

दाम चुकाते

हम सभी

इतना

स्वार्थ

क्यों

३३. बेकार से ख़्याल लिए बैठे हैं

क्यों
हम
आपसी
तकरार
लिए बैठे हैं,
छोटी सी ज़िंदगी
पल का पता नहीं,
किसके इंतज़ार में
न जाने किस खुमार में,
छोटी छोटी सी तकरार में
बिना सोचे बिना कुछ समझे
रिश्तों को तार तार किए बैठे हैं,
अंदर अंदर रहें घुटते
नफ़रत दिलों में भरते,
ख़ामोशी लबों पर ओढ़े
उम्र भर ग़म जोड़े,
ज़हर का संसार
दिल में ग़ुबार
लिए बैठे हैं,
बेकार की
ले बातें
बैठे
हैं

३४. यह अंधा बहरा गूँगा समाज

क्यों है
मुश्किलें?
दोषी कौन?
वही है दोषी
जो है जड़वत
मुश्किलों से जो डरे
परिस्थितियों में अड़े
हम भी शामिल हो खड़े
जो प्रश्न पड़े हैं बड़े बड़े
उत्तर की करे कौन तलाश?
यह अंधा बहरा गूँगा समाज
मुश्किलों पर मुश्किलें इतनी
पर उठती नहीं आवाज़
यह कैसा विरोधाभास?
क्यों हुआ अंधा समाज?
क्यों बहरा समाज?
क्यों गूँगा समाज?
खुद से पूछें
प्रश्न आज
क्यों ऐसा
हुआ?

३५. कुदरत का क़ानून

जिन्हें

अक़ीदा

ज़फ़ा पर,

ऐहतमाम

पर है अक़ीदा,

भूल बैठे हैं वोह

बेसाख्ता डूब जाएगा

यह आफ़ताब ज़ुल्म का

कब्ज़ा कुदरत पर रहेगा

सिर्फ कुदरत के क़ानून का

दीवानगी यह ज़ुल्म की

परवानगी ज़ुल्म की

चस्मक सी देर मेंह

चश्मओचिराग

मिट जाएंगे

बारुद के

ढेर के

जैसे

३६. छुपे हुए प्रश्न

है

ओट

वक्त की,

छुपे बैठे

कुछ प्रश्न हैं,

खोलेंगे ज़खीरा

अजब हालातों का

सामना झंझावातों का

करना होगा तब हमें

अगर अब भी न संभले

मंडरा रहे हैं काले बादल

सूखता संवेदना शजर

मर रही इंसानियत

मौन पड़ा है मंथन

दिलों में है ज़हर

धधकते हुए

फु फ का र ते

ज्वालामुखी

समान

प्रश्न

हैं

३७. वक्त के आँसू

अब

त्रिनेत्र

खुलने दो,

माँग रहा है

वक्त भी मंथन,

सघन इकाइयाँ

अब तरल हो गईं

मची हुई है आपाधापी

नाश लीला सरल हो गई,

कितना रक्त बहाएंगे?

पाप लूट का खाएंगे

मर के क्या ले जाएंगे?

अब तो पहचानो

वक्त के आँसू

कब तक

रोएगा

युग

३८. बिखरे पन्ने

कौन

समेटे

फैले हुए

बिखरे पन्ने,

वक्त की गर्दिश

आँधी बन उड़ाए,

उड़ रहे हवा संग

छूटते बिखरते पन्ने,

कुछ उम्मीदें जो छूटीं

सपने जो थे टूटे,

हाँ, यही तो है वो

बिखरे पन्ने,

समेटना

आसान

नहीं

३९. ग़ज़ल बन गई बातें

आज

ग़ज़ल

बन गई

हमारी बातें,

लिखते लिखते

लिखा बहुत कुछ,

कभी बादलों का नीर

कभी थी चाँद की तस्वीर,

कभी थी हिम्मत की हुंकार

कहीं पे किस्मत की ललकार,

आज जो लिखा आँखों का नीर

ज्यों बदल गई तस्वीर,

गीत से ग़ज़ल हुई

बहुत सारी बातें,

आज बदली सी

हमारी बातें,

बन गईं

ग़ज़ल

बातें

४०. डोर से बँधी पतंगें

क्या

कभी

देखी हैं

बँधी पतंगे

कैद हुई जैसे

ज्यों छूटना चाहतीं

डोर से बँधी पतंगे,

कितनी ही पतंगे दिखीं

फैसले जिनके लेता कोई,

खुद के जीवन की डोर

किसी के हाथ में हुई,

मिलती हैं अक्सर

ऐसी भी पतंगे,

बेबस हुई

मजबूर

बँधी सी

डोर

से

४१. धुंध भरे रिश्ते

है

धुआँ

ही धुआँ

रास्तों पर

मंज़िल पर

भरा ग़ुबार है,

सीलन भरे रिश्ते

कौन कुसूर वार है?,

उम्रभर की फ़ुर्सत है

न प्यार न ही तकरार है,

अजनबी हुए इतने

घर में ही दीवार है,

दिखावा ही दिखावा

हर तरफ है,

ढूँढे कब से

गुमशुदा

जिगरी

यार

हैं

४२. चाँद दाग वाला

देखा
चाँद को
कल मैंने,
धरती पर
सबसे मिलते,
पूछता बातें नयीं
खोजता उत्तर नयें,
ढूँढता समीकरणों को
व्यथित बहुत उन्मना सा,
हैरान हो दुनियादारी पर
उतरा था कल चाँद जमीं पर,
कुछ मिला या नहीं, कौन जाने?
दिल का दर्द कोई न जाने,
दाग एक साथ ले गया
ले गया दर्द पराया,
दाग सजाए हुए
आज निकलेगा
आसमां पर,
दाग वाला
सलोना
चाँद

४३. पिटारे में बंद अरमान

हैं

बंद

तंग से

पिटारे में

बहुत प्यारे

अरमान सारे,

खुली हुई खिड़की

ग़म तन्हाई के लिए,

क्यों बना ये बंद पिटारा

खुशियों की जुदाई के लिए?

वक्त को गुज़रता देखें

दायरो की क़ैद में से,

गुज़रती ज़िंदगी

आँखों के सामने,

न मोहलत

न फ़ुर्सत,

पिटारा

बंद

सा

४४. पिता

हे

तात!

निष्णात

शुभ्र कीर्ति

अवर्णनीय

यश व्यतिरेक

फिर भी हो तटस्थ

है पुत्र हित कंठस्थ

हे देव तुल्य तात!

हे वात्सल्य रूप!

है प्राणिपात!

है नमन!

तुमको

सदा

ॐ

४५. रोए पिता, बिटिया चली

अति

अधीर

गरल सा

नैनों का नीर

हृदय की पीर

गहन हलाहल

प्रश्नों से भरा सागर

भावना की भारी गागर

विवश था गरल पीकर

दिल का टुकड़ा देकर

सूना हुआ सारा घर

क्या करेगा जी कर

चली दहलीज़

को लाँघकर

रोए पिता

बिटिया

चली

४६. विदाई की बेला

ॐ

अति

संस्कारी

सिया प्यारी

जनक दुलारी

स्वयंवर को चली

मिथिला राजकुमारी

आशीष दें तारक गण

द्वार पड़े श्री राम चरण

शुभ लगन हो गया संपन्न

साक्षी था सृष्टि का कण-कण

पुष्प-वर्षा करे गगन

शुभ संयोग का उद्गम

मुदित अंतर्मन

विदाई की बेला

बरसें अश्रु

छमा छम

व्याकुल

पिता

थे

४७. पिता होना नहीं सरल

जो

पीता

गरल,

पिता होना

नहीं सरल,

वो अक्षत पात्र

अमृत का कलश,

बाँट देता सब कुछ

खुद के लिए हलाहल,

पिता होना नहीं है सरल

देकर मुकम्मल-सा जहान

कतरा-कतरा जो कुर्बान,

जलता दिए की तरह

जिम्मेदारियों की राह,

रुक सकता नहीं

थके जितना भी

लौह पुरुष

बन पाना

सरल

नहीं

है

४८. दर्द पिता को भी होता है

दर्द

पिता को

भी होता है,

आँसू दिखाना

मुमकिन नहीं,

आहुति बनकर

जो होम होता रहता

जीवन यज्ञ की अग्नि में,

अवर्णित ही रहता त्याग

करता ताउम्र भागम भाग

करता रहता बिना स्वार्थ,

तटस्थ सी पर्वत शिला

न कोई आँसू, न गिला,

सबके लिए जिया

क्या-क्या नहीं किया,

त्याग पिता का

मुश्किल है

समझ

पाना

४९. पिता देवता

ॐ

पिता
देवता
होता गया
दर्द सबके
चुपचाप लिए,
होम करता रहा
जीवन की अगन मे
कुर्बान जो करता रहा
खुद का हर एक सपना
कर सकता है पिता ही ऐसा
तूफानों में खड़ा वो चट्टान जैसा
जलता रहा दीपक बनके
मुस्कुराता रहा आँसू पी के
सदा औरों के लिए जी के
देवत्व गढ़ता रहा
त्याग करता रहा
मौन रहकर
सब जो करे
बस पिता
ही करे
पिता
ही

५०. बिन पिता के

थे

नहीं

अकेले

स्नेह सिक्त

प्रेमाच्छादित

पितृ छाया में थे

सुरक्षित था घर

सुरक्षित माँ का वर

सुख आते थे द्वार पर

रुतबा मानता था नगर

बदल गए सारे स्वर

पिता के न होने पर

सूना सूना सा घर

बिछड़ गए थे

मधुर स्वर

बदला सा

मंज़र

हुआ

था

५१. ओ बाबा!

ओ

बाबा!

सुनो तो

मेरी बात

तेरी दवन्नी

चवन्नी अठन्नी

लागे चकरघिन्नी

हर ख्वाब करे पूरा

नहीं रहे कुछ अधूरा

कम में भी मिले ज्यादा

सबसे तेरा वादा

समझ न आता

पूरा हो जाता

जादूगर

हो बाबा

तुम

तो

५२. हे तात!

हे
तात!
द्वार की
तख्ती पर
नाम तुम्हारा
अंकित है जब
तो न दुःखों का साया
न ही विपत्ति की छाया
सच कहता हूँ तात श्री
सुख के साधन पूरे सब
हर खेल खिलौना मेरा तब
किसी बाधा की हुंकार नहीं
दुःख किसी प्रकार नहीं
सुखों का संसार वहीं
जहाँ रहें तात श्री
वैभव समृद्धि
स्नेह स्वीकृति
सदा होवे
आवृत्ति
सुख
की

५३. नारी

मैं

नारी

आस हूँ

विकास हूँ,

अभिव्यक्ति मैं

मैं मुक्ति, शक्ति मैं

राम के संग सीता

कृष्ण के संग राधिका

मैं ही हूँ जीवन निर्मात्री

मैं ही हूँ साधिका आराधिका

समग्र सृष्टि का सार मैं

अंधकार में प्रकाश मैं

त्याग का अवतार मैं

विकास का सार मैं

पर फिर भी क्यों

संघर्ष मिला?

आखिर क्यों?

पूछती

आज

मैं

५४. अग्नि परीक्षा जीवन भर

कुछ

प्रश्न जो

कभी नहीं

पूछे किसी ने,

कन्या का दान क्यों?

लड़की पराया धन

आखिर क्यों? प्रश्न गहरा

कोई वस्तु मान दान दिया

इतनी निष्ठुर प्रथा क्यों?

लड़की ही घर छोड़े

आखिर क्यों? पूछूँ मैं

तिल तिल मरती

दे अग्नि परीक्षा

जीवन भर

कोई प्रश्न

उठा न

कभी

५५. अग्निपथ

होते
वचन
पूरे नहीं,
रह जाती है
कसम अधूरी,
मिलता अर्द्ध सत्य,
करते हैं पूरी रस्में
सात फेरे, सात कसमें,
फिर क्यों परीक्षा जीवनभर?
क्यों अधूरी रहती यह शपथ?
क्यों मिलता है अग्निपथ, अग्निपथ?
क्यों नहीं नेह बरसाते से रिश्ते?
क्यों रहते हैं जीवन खिंचते?
क्यों नहीं वह वादे निभते?
जीवनभर अग्निपथ
जीवनभर का तप
कैसी यह शपथ?
अधूरी कसमें
अधूरा सच
अग्निपथ
जीवन
भर

५६. क्यों हुआ रण?

युग
पूछता,
जो पाना था
क्या मिला वही?
थे जिसके लिए
लड़ते हर घड़ी
क्या प्राप्त हुआ है वही?
पीड़ा का न खाता न बही
पूछ रहा युग सदियों से
क्या मिला किसी को इस रण से?
सूने से घर, बिछुड़े हुए वर
निर्धन निर्जन रोता सा दृश्य
था जैसे शमशान सदृश्य
अश्रु की धारा चारों ओर
शोक पीड़ा घनघोर
रुदन चहुँ ओर
अनाथ बालक
विधवा स्त्रियाँ
सूने घर
क्यों हुआ
रण??

५७. प्रश्नचिन्ह

क्यों
मृत
चेतना
अंतर्गत
ढूँढ रही है
शमन भट्टिका?
बिंधते से प्रश्न हैं
अनवरत प्रतीक्षा
कब टूटेगी यह तंद्रा?
बहुत गहरे आघात हैं
क्यों नहीं पूछे जो सवाल हैं?
आहें भरता वक्त खड़ा
बोझ सवालों का बड़ा
खामोश हरदम
घुटता है दम
पूछते प्रश्न
प्रश्न चिन्ह
हमसे
छूटे
जो

५८. पूछे नहीं सवाल

हे!
प्रभु
लाई हूँ
प्रश्न सूची
तुम्हारे पास,
अर्पित करती
तुम्हारे चरणों में
बहुत सारे सवाल
वक्त थक गया बोझ से
अब खुद ही इसे सम्हाल,
उत्तर मौजूद हो न सके
क्योंकि पूछे नहीं सवाल,
समझी न जिम्मेदारी
बोझ बहुत भारी
चल रहे हम
कब से लिए
बोझ बने
प्रश्नों को
साथ
में

५९. बड़ा सा चाँद खिला दो

है

सुना

कहते

सूख रहे

तट गंगा के

नीर तो बहा दो,

निरुत्तरित प्रश्न

उत्तर तो समझा दो,

बहुत अँधेरा छाया है

बड़ा सा चाँद खिला दो,

सूखे न ये शजर

मेघ बरसा दो

उम्मीद टूटे

न कभी भी

जग को

बचा

लो

६०. गुल्लक यादों का

हैं
याद
अब भी
भूले नहीं,
यादों में रहे
किस्से बहुतेरे,
कई पेड़ तनों के
झुरमुट से थे घेरे,
कच्चे पक्के से थे बसेरे
सब मिलते साँझ सवेरे,
तब नहीं थे मुद्दे तेरे मेरे
कुछ यादों का गुल्लक पास मेरे,
आज वही पुरानी यादें ले के
मैंने वह गुल्लक तोड़ा है,
रंग चटक है आज भी
तरोताजा है वैसा ही,
याद आए बहुत
वक्त वो पुराना,
भरी गुल्लक
मीठी यादें,
महकें
दिल
में

६१. बुद्ध चले अपनी खोज में

था

त्यागा

घर को

रात में ही,

बुद्ध चले थे

खोज में स्वयं की,

मोह माया त्यागने

निकले निज साधने,

जग साधना पूरी नहीं

जब तक साधा निज नहीं,

वह जानने को थे व्यग्र

वक्र सा जीवन चक्र,

सब त्याग दिया

किस बोध में?

बुद्ध चले

अपनी

खोज

में

६२. पन्ने अखबार के

वो
जीत
हार के
सारे किस्से,
रोज़ बताते
सुबह सवेरे,
पन्ने अखबार के
कहते बहुत कुछ,
बताते किस्से संसार के
समझाते गुस्से से प्यार से
कभी करें मनुहार प्यार से
कभी भरते कठिन हुंकार से
एक आध की खबर नहीं कहते
लेकर आते खबरें पूरे संसार से
बहुत कुछ कहते पन्ने अखबार के
लेकर आते पुराने उदाहरण भी
करने आते हैं बातें हर युग की
सत्य की खोज से निर्वाण तक
सारी बातें वेद पुराण तक
कहते सब कुछ निष्पक्ष
आपाधापी से पाप तक
ले आते हैं पूरा सच,
अर्द्धसत्य की बातें
वो भी कह जाते,
छोड़ें न कुछ
अखबार
के पन्ने,
सच
में

६३. सृष्टि पीड़ित हैं

है

विश्व

हो रहा

मरुस्थल,

मिले न हल

ढूँढे जल थल,

स्तिथि नहीं सरल

लोक पीड़ा से विकल,

कहाँ से लाएंगे शिव को

जो पी सके इतना गरल,

जो किए थे पाप संचित

हो रहे अब वंचित,

अभावों से हैं दुःखी

कोई नहीं सुखी,

ये कैसा हाल

कर दिया?

हमने

सृष्टि

का

६४. उम्र कट जाती है दरारें भरने में

हैं

होती

बहुत

छोटी छोटी

कितनी बातें,

बन जाते मुद्दे

छोटी छोटी बातों से,

गलतफहमी बढ़े

नफरत भी बढ़ जाती

दरार दिलों में पड़ जाती,

बड़ी मुद्दत लगती है

दरारों को भरने में,

उम्र कट जाती है

मुद्दे मरने में,

बातें होती हैं

छोटी छोटी

बड़े है

मुद्दे

ही

६५. नीर तब लवण हो

न

मिले

सदा ही

अनुकूल,

रण जीवन

द्वंद्व प्रतिक्षण,

हों खड़े खाली हाथ

जब सबकुछ खोकर,

विश्वास को लगे ठोकर

नीर तब लवण होकर

कपोल पथ पर चले,

चक्षुशाला छोड़कर

अश्रुधारा हो बहे,

विश्वास आघात

नेह निकास,

लवण सा

तब हो

नीर

भी

६६. सवाल जो छूट गए

क्यों

नेत्र

पट्टिका

बाँधकर

बैठी गाँधारी,

सिंहासन बैठे

नेत्रहीन धृतराष्ट्र,

दुराचारी था दुर्योधन

कितने तीक्ष्ण सवाल,

लज्जित कुलवधू

करती पुकार,

कोई न सुने

विडंबना

कैसी थी?

पूछता

युग

है

६७. चीर हरण

सोचो

पांचाली

असहाय

कितनी होगी

अपनों के मध्य

अपनों के ही द्वारा

अपमानित की गई

निर्लज्जता द्योतक

था चीरहरण

हरि शरण

था रक्षण

शील का

हुआ

६८. छूटे प्रश्नों की बानगी

थे

बैठे

लज्जित

नेत्र मूँद

अति कायर,

कैसे छोड़ दिया?

कुल की थी लाज वो,

काश! कोई पूछ लेता

कोई तो करता सवाल,

छूटे प्रश्नों की बानगी

बना महाभारत,

बहुत से प्रश्न

छूटते रहे

भुगतान

युग ने

किया

है

६९. महाभारत रण

हैं
कहाँ
उत्तर?
पूछे युग
कितने प्रश्न,
था चीर हरण
महाभारत रण,
हीन हुआ सदाचार
मोह, लोभ व अंहकार,
भाई भाई से जा टकराया
हुआ नाश, हाथ न कुछ आया,
खिंच गईं दीवारें दिल-भीतर
हुआ रण, नष्ट हुए कितने घर
अश्रुपूरित हुए धरती नभ,
रण क्षेत्र लहू से लाल हुआ
कितनों का ही संहार हुआ,
सूने हुए कितने घर
निर्जन जीवनभर,
दुर्भाग्य परिहास
तीव्र अट्टहास,
क्षीण साहस
पूछे युग
क्या मिला
रण
से?

७०. हे कृष्ण! फिर आओ!

हे
कृष्ण
साक्षात
फिर आओ,
चीर हरण
अब भी है जारी,
निष्ठुर सी परीक्षा
मानवता फिर हारी,
कैसा विडंबना काल है?
नाश पाप का पलड़ा भारी,
निरंकुश हुए हैं व्यभिचारी
फिर से असुरक्षित हुई नारी,
अंधा बहरा गूँगा है शासन
असहाय व्याकुल है मन,
अंधी हुई न्याय की देवी
बाँध पट्टिका आँखें फेरी,
अब न लगाओ देरी
कान्हा अब आ जाओ,
मरण हरण
ताण्डव रोको,
जरुरत
तुम्हारी
जग
को

७१. कैकयी के वरदान

रे

हाय

कैकई!

डस लिया

शापित किया

वर माँगकर

वर था या था श्राप?

पूछे दशरथ

नेत्र कातर

झर झर

बरसे

आँसू

थे

७२. प्रतीक्षा में परीक्षा

थे

बीते

चौदह

लंबे वर्ष,

घर को लौटे

राम सीता संग,

प्रतीक्षा में परीक्षा

जैसे अब भी खड़ी थी,

वनवास के पश्चात् भी

अग्नि परीक्षा की वो घड़ी थी,

शील की मूरत वैदेही

समझे जवाबदेही,

धर्म रक्षा खातिर

शिरोधार्य व्रण,

धन्य हे! सीता

नमन है

आकाश

भर

ॐ

७३. जाने क्यों?

क्यों

ग्रस

रहा है

कोई राहु

ग्रहों के छोर

मूर्छित पड़े है

अस्ताचल के मोड़

व्यथित देखता

व्याकुल नभ

रक्तिम से

मेघों को

जाने

क्यों?

७४. धन्य हो तुम, हे सीता!

हे!
सीते,
निष्ठुर
यह जग
तू जानती है,
फन खोल खड़े
कितने विषधर,
देती प्रश्नों के उत्तर
चली थी जो अग्नि भीतर
समा गई अवनी अंदर,
जिसे छूकर अग्नि पाक हुई
जिसे पाकर धरा विशाल हुई,
शुद्ध पाक पावन सरिता सीता
भाग्य बदी परीक्षा पे परीक्षा,
कंत छवि हृदय धार कर,
रही सीता रिपु द्वार पर,
धर्म निष्ठ पताका सत्य की
मिसाल नहीं ऐसी कोई,
जपती थी अविराम
आधार राम राम,
नमन हे! सीता
तुम साक्षात
मूरत हो
सत्य की
धर्म
की

७५. उठो कारवां सजाना है

उठो

कारवां

सजाना है,

रोए द्रौपदी

व्यथित अहिल्या

अंधा मूक समाज,

अब भी सीता हरण

निर्भय घूमते रावण,

प्रश्न चिन्ह पर प्रश्न चिन्ह

उत्तर मिलना कठिन,

फिर से मिलाने होंगे

छूटते हुए सिरे,

राम और कृष्ण

ढूँढने होंगे

मिलकर

फिर से

अब

७६. युग पूछता प्रश्न

युग

पूछता

प्रश्न नये

कंटक शैय्या

तिमिर का घेरा

उग्र ज्वालामुखी

फिर भी सो रहे हो?

बड़े धन्य हो तुम भी

चोट पाँव में लगी हुई

रुधिर लाल हुई धरती

विनाश सामने खड़ा है

क्यों जिद्द पर अड़ा है?

विनाश न स्वीकार

वक्त की पुकार

सुन ले अब

चल उठ

अब तो

चलें

७७. हद है

है
हद
जग में
परवाह
नही है कोई,
मतलबखोरी
द्वेष और निंदा है,
लोभ पाप भी जिंदा है
कहने को खुला गगन
मानव आजाद परिंदा है
हद है कि हम भटक गए
छोटी बातों में अटक गए
दुर्घटना घटी सतर्क नहीं
कोई जिए मरे कोई फ़र्क नहीं
कातर दशा अवतरित हुई
लेशमात्र भी परवाह नहीं
हद पार बेरुखी आ बैठी
नीयत रास्ते से भटकी
लोभ तृष्णा में अटकी
मानव से दानव
बन बैठे हम
पथभ्रष्टक
मति भ्रम
शापित
युग
है

७८. प्रश्न पूछते रहें

प्रश्न

पूछिए

वक्त पर

कड़वे प्रश्न

छूटे हुए प्रश्न

बहुत तीखे प्रश्न

जरूरत है युग की

कर्ज़ हम पर वक्त का

चुकाना ही होगा यह कर्ज़

वक्त की नब्ज़ पढ़कर

पूछने ही होंगे प्रश्न

त्रिशंकु बने प्रश्न

न आर न पार

मूक दर्शक

मत बनो,

पुकारे

युग

७९. ग़म नहीं

भाया
प्रस्ताव
नहीं मेरा,
छोड़ देते हैं
पूछना आपसे
वो प्रश्नों की पंक्तियाँ,
प्रतिवेदन प्रस्तुति
खारिज करते हैं हम,
कोई द्वेष भाव न रखना
संक्षिप्त सी है जीवन सरिता
स्वीकार किया जो भी यहाँ मिला
सहयोग मिला सबको नमन
महकता रहे जीवन का चमन
जो हृदय भीतर भाव थे भरे
उर अंदर ही क्यों प्राण तजे
भाव अभिव्यक्ति ज़रूरी थी
गिला नहीं मुझको कोई
नही मिला समर्थन
कोई बात ही नहीं
बहुत खुश हूँ
अपनी बात
मैंने कही
ग़म न
कोई

८०. अनुभूति का जागरण

क्या

कभी

देखा है

जागरण

अनुभूति का

विकसित होती

मंथन सागर में

जग भय छोड़कर

अपनी धुन में मगन

स्वयं अपनी राह बनाती

सबका मंगल देखती

बाधाओं से पार होती

आवाह्न को आतुर

समझ से परे

पूर्ण स्वच्छंद

वास्तविक

समझे

कोई

न

८१. मन

है

मन

भँवरा

बावरा सा

भटकता है,

खोजता लक्ष्य को

नित चिर भ्रमण

स्वच्छंद-सा विचरण,

दिशाहीन दिशा साधक

खोजता नित नए आयाम,

सदा पूछता प्रश्न नए

अनजान पथिक-सा,

लौ प्रज्वलित करे

ज्ञान दीपक की,

भ्रमण शील

खोजता है

स्थिरता

जग

में

८२. आए थे चाँद तारे मिलने मुझे

थे

आए

रात में

चाँद तारे

मिलने मुझे,

साथ में लाए थे

तोहफे नये-नये,

एक उजली किरण

निष्कंटक राह के लिए,

एक आशा-दीप भी लाए थे

तोहफा उत्साह के लिए,

दे रहे थे आशीष भी

भव्य सफलता का,

बोले, आगे बढ़ो

हिम्मत साधे,

तुममे है

हौंसला

वज्र

सा

८३. हैं खुश बहुत चाँद तारे

हैं
खुश
बहुत
चाँद तारे,
देखते मुझे
निडर बढ़ते,
लेते मेरी बलैया
मैं जो खोजूँ राह नई,
बोले सारी कायनात से
पथ प्रशस्त करना तुम्हें,
गिरने न देना कभी भी कहीं
बना देना अंबर का शामियाना
देखना आँच आए नहीं कभी,
यूँ बिछा देना पाँव के नीचे
नर्म सी घास की चादर,
निष्कंटक राह रहे
ध्यान रखना तुम्हें,
नहीं अकेली मैं
संग में मेरे
कायनात
चलती
छाँव
सी

८४. हे ईश्वर! सद्गति दें

हे

नाथ

ईश्वर

सद्गति दें

साहस भी दें

प्रशस्त मार्ग हो

पथ दर्शन करें

सुख मिले समृद्धि हो

साकार होवे हर आशा

मंगल बढ़े यश भी बढ़े

पूरी होवे हर एक कामना

ऐसी कृपा का संधान करें

शुद्ध बुद्धि प्रदान करें

सत्य का पालन करूँ

जो हो सारगर्भित

सदा प्रतिष्ठित

स्नेह सिंचित

सत्य प्रेम

मिश्रित

कहूँ

ॐ

८५. गागर में सागर भरूँ

रच

सागर

विशाल सा

गागर भरूँ,

बूँद से सागर

फिर भरूँ गागर,

संपूर्ण सार साकार

सागर गहन विशाल,

एकल अनवरत चलूँ

स्वयं ही अन्वेषण करूँ

साहस पुंज प्रवाल

निडर है चलना

नीरव है मार्ग

मशाल बन

जलना ही

मुझको

होगा

८६. ढूँढती विषय नये

थी

जब

निकली

ढूँढने को

विषय नये

मिला मुझे चाँद

छुपा तलहटी में,

और दिखाई दिया था

राहु रेखा फाँदते हुए,

ग्रहण दिखा कई घरों में

मिला देवता कई रुपों में,

कहीं भाग्य का दीपदान

बहुत सा व्यवधान

कहीं था देखा मैंने,

प्रश्न हजारों थे

उत्तर मिले

गिनेचुने,

विषय

ऐसे

थे

८७. ढूँढ़ती हूँ उत्तर

रोज

ढूँढने

निकलती

साथ चलते

मेरे चंद साथी

चंद तारे मुट्ठी में

आग लिए सूरज से

तेज लेकर तूफानों से

चंद कतरे ज्वालामुखी के

समीकरणों को उलट

राहु केतु को पलट

ढूँढती हूँ उत्तर

बैठे छुपकर

खोटी नीयत

जालसाजी

ज़ुल्म के

तले

८८. प्रयास करो

छोड़

हौंसला

हार कर

क्यों बैठ गए?

चलो आगे बढ़ो,

कोई ज़रूरी नहीं

न बनो चाँद न सही

चमके जुगनू भी

रौशन रात हो

तम तोड़ती

मत बैठो

प्रयास

करो

८९. क्यों मुद्दे मर जाते हैं?

जो

उठे

उँगली

मुद्दों वाली,

बात हो सीधी

आड़ी तिरछी नहीं,

क्यों मुद्दे अड़ जाते हैं?

मुद्दे क्यों मर ही जाते हैं?

दब जाते मुद्दे बातों तले

लंबा है वादों का विवाद

सबका एजिटेशन

सबका फ्रस्ट्रेशन

सब कुछ ही चले

धीरे धीरे मरें

बातों के तले

सिर्फ ये

मुद्दे

ही

९०. चंद्र खिलौना

देखो

कितना

है सलोना

चंद्र खिलौना

तारत गणना

अब मत बढ़ना

चाँद का पलना

धीमे चलना

ठंडी छाया

सपना

आया

९१. नख शिख वर्णन

है
रीझा
दर्पण
मनोहर
कोमल श्लाघ्य
सुंदर सी छवि
दामिनी विनोदिनी
मुदित हुई मालिनी
इठलाती अति गर्व से
गौरवशाली सौंदर्य गाथा
प्रशंसा गान कवि वृंद गाता
नख शिख वर्णन अति लुभाता
सुंदर छवि काव्य जन्मदाता
गीत स्वयं रचित हो जाता
नयनाभिरामम् स्नेहिल
मृगतृष्णा सा लावण्य
हो चेतना हरण
सौंदर्य रागिनी
कोमलांगिनि
अति मुग्ध
अपने
रूप
से

९२. आरक्षण

क्यों

राष्ट्र

ग्रसित

तीव्र पीड़ा

आरक्षण की

आदेश निर्दिष्ट

जातिगत विशिष्ट

वंचित हुआ सुविज्ञ

असहाय अधीर क्रुद्ध

उद्वेलित हुआ अंतर्मन

विवशता से जले तन

मौन हुआ शासन

गंभीर है प्रश्न

कौन बताए

क्या है हल?

वेदना

तीव्र

है

९३. कटे सघन वन

थे

वन

सघन

घनाघन

चली आरियाँ

कटे कई वृक्ष

कहीं कटी भुजाएं

कोई शीश हीन हुआ

ज़ार-ज़ार रोई प्रकृति

नभ का सीना विदीर्ण हुआ

क्यों यह ताण्डव जारी है?

जागो धरा हमारी है

क्यों पाप से यारी है?

मद चूर नर

अहंकारी है

विनाशक

प्रक्रिया

जारी

है

९४. कर्मवीर

पथ
अग्नि का,
कर्मवीर
निर्भीक खड़ा,
शक्ति संवर्धन
वज्र के आघातों से,
सूरज को चाँद बना
सजाता है आसमान में,
टाँक तारे काली चादर पे
सजाए गगन को रातभर,
श्रम स्वेद बिंदु ओस बने
बिखरें धरा के कण-कण पर,
फिर दे चाँद को तलहटी में छुपा
और ले आए एक सूरज नया सा,
अनवरत चलता कर्मवीर
बोता आशाएँ धरती को सींच,
सजग खड़ा सीमाओं पर
शत्रु का सीना चीरकर,
कहीं तोड़ता पत्थर
सख्त सड़कों पर,
खोलता खिड़की
उम्मीद वाली,
कर्मवीर
नमन
तुम्हें

९५. हुलिया चाँद का

कल

मिली थी

चंदनियाँ

ढूँढती चाँद

अमावस रात

पूछती गली गली

चाँद को देखा कहीं

रपट लिखवाने गई

अजब विपदा तब हुई

आकार रहे न एक सा

हुलिया बताए कैसा

मायूस थी चाँदनी

चाँद को ढूँढती

पूर्णिमा रात

खोया चाँद

फिर से

मिला

९६. तुम्हें याद हो कि न याद हो

था

लिखा

कुछ तो,

मैंने लिखा

हाँ, यहीं पर

यहीं पर ही तो

एक राग लिखा था

एक नगमा छेड़ा था

वही पुरानी सी बात है

अक्सर जो हम कहते थे

वो जो बातों सी कुछ तो बात थी

तुम्हें याद हो कि न याद हो

पर हम भूले न कभी

वो नज़्म याद है हमें

हर हर्फ़ याद है

वह जो था लिखा

तुम्हें याद हो

शायद वो

लिखा था

यहीं

पे

९७. आओ नवीन विधा का प्रचार प्रसार करें

है

विधा

नवीन

है प्रवीण

काव्य सृजन

नित्य नव योग

नये-नये प्रयोग

तो आओ प्रारंभ करें

प्रतिदिन लेखन अब,

प्रचार प्रसार विधा नव

नित्य नवीन प्रयोग हों

सबका सहयोग हो,

लेखन में जोश

भाव संयोग हो,

वर्ण गणना

ओम विधा

सार्थक

काव्य

है

९८. ओम आकृति विधा का प्रचार

शुष्क
पथ है
नीरव सा
शांत अकेला,
घनीभूत हुआ
मूक असहयोग,
करूँ क्या मैं? छोड़ राह
बैठ जाऊँ मैं हार कर,
या करूँ चेष्टा और जीत लूँ
जटिलताओं का संहार कर,
यह मंथन पथ है साहस का
आँधियों के सीने पर दीपक जला
कहे मुझसे मेरी अंतरचेतना,
प्रयोग नया संग नवीन विधा
डर मत आगे कदम बढ़ा
स्वयं अपनी राह को बना,
बीड़ा उठाया है तुमने
नव विधा प्रचार का,
नवीन सा प्रयोग
साथ में लेकर
बना रहे हो
नई राह,
सफल
होगे

९९. मुरली अति मतवारि

यूँ
बाजे
मधुर
मुरलिया,
चित्त उमगत
तान अति सोहत,
हे! नंदलाल मुरारी
मुरली अति मतवारी।
चक्रपाणि विष्णु संग जैसे
नाग माल शंकर संग जैसे
तस मुरली तिहारी, कान्हा
कृष्ण मोहन गिरधारी
मुरली है मतवारी।
अधरन मुरली
राज करत है
करे जगत
रखवारी,
मुरली
संग
है

१००. लक्ष्मी आह्वान

हे

लक्ष्मी!

कमला!

नारायणी!

पद्मा,वर दो!

वरद हस्त से!

मिटे दुःख दारिद्र्य!

मंगल जल बरसे!

कोई भी विकल न रहे!

समृद्धि की ही बयार बहे!

चंद्रिका सम रूप धर!

स्वर्ण वर्षा घर घर!

शान आलीशान हो!

मान सम्मान हो!

धन धान्य से

परिपूर्ण

सौभाग्य

वर्षा!

हो

१०१. चाँद तारे उम्मीदों वाले

टाँग

दिया है

आज मैंने

छत-ऊपर

चमकता चाँद,

किरण बन कर

उतरता है अक्सर

बंद सी खिड़कियों पर,

अँधेरी हर डगर पर

खिलता अँधेरों को चीरकर,

रख दिए हैं कुछ तारे भी

फलक पर बिछा कर

उम्मीद बन आए हैं

धरती से मिलने

लाए हैं रोशनी

जग के लिए

ढेर सारी

दुआएँ

देते

ISBN 979-8-9865270-1-7